بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْم وَعَلٰی عَبْدِہِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ
دفتر مجلس انصار اللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्ब: जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 12 जून, 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.
(अहसान महीने की तिथि 12 ,1405 हश)

आँहज़रत ﷺ के अज़ीम उसवा ए जूदो सख़ा (दानशीलता) की रौशनी में आप स. के अख़लाक़ ए फ़ाज़ला का दिल आवेज़ तज़करा।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba- 12.06.2026
محلہ احمدیہ قادیان۔پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لا إِلَـهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

امّا بعد فاعوذ بالله من الشيطٰن الرجيم۔بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اَلْحَمْدُ لِلهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۔ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّينَ۔

तशहुद, तअव्वुज़, सूर: फ़ातिहा, सूर: बक़रह की आयत 275 और सूर: ज़ारियात की आयत 20 की तिलावत के बाद हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल् अज़ीज़ ने फ़रमाया:

पहली आयत जो मैं ने पढ़ी है वो सूरतुल् बक़रह की है जिस का तर्जुमा है कि जो लोग अपने माल रात और दिन छुपा कर भी और ज़ाहिर करके भी अल्लाह की राह में ख़र्च करते रहते हैं उनके लिए उन के रब्ब के पास उनका बदला महफ़ूज़ है और न तो उन्हें कोई ख़ौफ़ होगा और न वो ग़मगीन होंगे।

दूसरी आयत सूरतुज़ ज़ारियात की है जिस में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि और उनके मालों में मांगने वालों का भी हक़ था और जो मांग नहीं सकते थे उन का भी हक़ था।

आज मैं आँहज़रत ﷺ के जूदो सख़ा के उसवे के मुतअल्लिक़ कुछ रिवायतें बयान करूँगा। इन रिवायतों से पता चलता है कि आप ﷺ का अपना अमल क्या था और आप ने किस तरह बार-बार मोमिनों को इस हवाले से तवज्जो दिलाई है।

क़ुरआने करीम में अल्लाह तआला ने ज़रूरत मंदों की ज़रूरयात पूरी करने की तरफ़ बहुत तवज्जो दिलाई है। आंहज़रत ﷺ ने भी इस तरफ़ न सिर्फ़ अपने इर्शादात से बल्कि अपने अमली नमूने से भी बहुत तवज्जो दिलाई है।

हज़रत अनसؓ बयान करते हैं कि आंहुज़ूर ﷺ इन दुआइया कलिमात के साथ दुआ किया करते कि ऐ अल्लाह! मैं बुख़्ल से, सुस्ती से, बदतरीन उम्र से और क़ब्र के अज़ाब से और ज़िंदगी और मौत के फ़ित्ने से तेरी पनाह मांगता हूँ।

इसी तरह हज़रत अनस से ही रिवायत है कहते हैं- नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ये दुआ करते थे कि: اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ، وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ، وَالْجُبْنِ وَالْبُخْلِ، وَضَلَعِ الدَّيْنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ। यानी: ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह लेता हूँ फ़िक्र और ग़म से, आजज़ी (दीनता) और सुस्ती से और बुज़दिली और कंजूसी से और कर्ज़े के ज़्यादा होने से और लोगों के ग़ल्बे से।

अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करने के मुतअल्लिक़ आपؐ ने ये नसीहत फ़रमाई है कि थैली का मुँह बांध कर न रखा करो वरना तुम से रोक लिया जाएगा। फ़रमाया: गिनते न रहा करो, वरना अल्लाह भी गिन-गिन कर देगा।

फ़रमाया: सख़ावत (दान) करने वाला अल्लाह के क़रीब है, जन्नत के क़रीब है, लोगों के क़रीब है और आग से दूर है। जबकि बख़ील (कंजूस) अल्लाह से, जन्नत से, लोगों से दूर है लेकिन आग के नज़दीक है। जन्नत में धोखेबाज़, बख़ील और एहसान जताने वाला दाख़िल न होगा। मोमिन सादा लौह (स्वच्छ मन) और सख़ी होता है जबकि फ़ाजिर (पापी) धोखा देने वाला और रज़ील है।

एक मौक़े पर नसीहत करते हुए आप ﷺ ने फ़रमाया कि ऐ इब्ने आदम! तेरा अपनी ज़रूरत से ज़ायद माल ख़र्च करना तेरे लिए बेहतर है। तेरा उसको रोक रखना तेरे लिए बुरा है, बक़द्रे ज़रूरत रोक रखने पर मलामत नहीं की जाएगी। तू इससे शुरू कर जिस की परवरिश तेरे ज़िम्मे है। ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है।

एक दफ़ा आंहुज़ूर ﷺ हज़रत बिलालؓ के पास तशरीफ़ लाए, उनके पास खजूर की एक ढेरी जमा थी जो उन्होंने नबी ﷺ और आपؐ के मेहमानों के लिए जमा कर रखी थी। आंहुज़ूर ﷺ ने हज़रत बिलालؓ को मुख़ातब करके फ़रमाया कि क्या तुम इससे नहीं डरते कि इस ज़ख़ीरे पर जहन्नम की गर्म लपेट आ पहुँचे? फिर आपؐ ने फ़रमाया कि ऐ बिलाल! ख़र्च करते चले जाओ। ख़ुदाए ज़ुल-अर्श के होते हुए फ़क्रो फ़ाक़ा (ग़रीबी) से मत डरो।

एक मौक़े पर आंहुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि मैं तो सिर्फ़ तक़सीम करने वाला हूँ देने वाला तो अल्लाह है।

जूदो सख़ा की सिफ़त आपؐ में बअसत से क़ब्ल भी पाई जाती थी, जिस की गवाही हम हज़रत ख़दीजाؓ के इस बयान में पढ़ते हैं जो पहली वही के मौक़े पर उन्होंने दी थी।

आपॅ ने फ़रमाया था कि घबराने की ज़रूरत नहीं। ब-ख़ुदा! अल्लाह आपॅ को कभी रुस्वा नहीं करेगा। आपॅ सिला रहमी करते हैं, आजिज़ (दुर्बल) का बोझ उठाते हैं, वो नेकियाँ करते हैं जो मादूम (ग़ायब) हो चुकी हैं, मेहमान नवाज़ी करते हैं और हक़ीक़ी मसायब में मदद करते हैं।

आंहुज़ूरﷺ ने फ़रमाया कि दो आदतें मोमिन में नहीं हो सकतीं: एक बुख़्ल और दूसरी बद- ख़ुल्क़ी। फ़रमाया: ज़ुल्म से बचो... बुख़्ल और हिर्स (नक़ल) से बचो यक़ीनन बुख़्ल ने तुम से पहलों को हलाक किया था। किसी बंदे के दिल में हिर्सो बुख़्ल और ईमान इकट्ठे नहीं हो सकते।

हज़रत अनसॅ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाहﷺ लोगों में सब से ज़्यादा हसीन थे, लोगों में सब से ज़्यादा सख़ी थे, लोगों में सब से ज़्यादा बहादुर थे।

आपॅ ने फ़रमाया कि अल्लाह सब सख़ावत करने वालों से ज़्यादा सख़ावत करने वाला है और मैं बनी आदम में सब से ज़्यादा सख़ावत करने वाला हूँ।

रिवायात में मज़्कूर है कि आंहुज़ूर ﷺ रमज़ान में बहुत ज़्यादा सख़ावत फ़रमाया करते और ख़ैरो भलाई में आपॅ तेज़ आँधी से भी ज़्यादा तेज़ हो जाया करते। आपॅ फ़रमाते थे कि अगर मेरे पास तहामा के पहाड़ों के बराबर सोना होता तो मैं वो सब तुम में तक़्सीम कर देता और तुम मुझे झूठा या बख़ील नहीं पाओगे। फ़रमाया कि मैं पसंद नहीं करता कि मेरे पास ओहद पहाड़ जितना सोना हो और तीसरी रात गुज़र जाए कि उस में से एक दीनार भी मेरे पास बच जाए, सिवाए उसके जो मैंने कर्ज़ अदा करने के लिए रख छोड़ा हो।

फ़रमाया: जो बहुत मालदार हैं और ज़रूरत मंदों पर ख़र्च नहीं करते वही क़यामत के दिन बहुत नादार होंगे।

एक शख़्स ने आंहुज़ूरﷺ से दो पहाड़ों के दरमियान जितनी भी बकरियाँ थीं सब मांग लीं। आपॅ ने उसे वो सब अता फ़रमा दीं। वो अपनी क़ौम के पास गया और कहा कि ऐ मेरी क़ौम! ईमान ले आओ! ख़ुदा की क़सम! मुहम्मद (ﷺ) तो इतना देते हैं कि गुर्बत का डर नहीं रहता।

बाज़ औक़ात कोई शख़्स सिर्फ़ दुनिया की ख़ातिर भी इस्लाम क़बूल करता तो उसे इस्लाम दुनिया व मा-फ़ीहा से बढ़ कर महबूब हो जाता।

आंहुज़ूरॅ आने वाले कल के लिए कोई चीज़ बचा कर न रखते। एक दफ़ा नबी करीम ﷺ ने अस्र की नमाज़ पढ़ाई और जल्दी से घर तशरीफ़ ले गए और फिर बाहर तशरीफ़ लाए। पूछने पर फ़रमाया कि मैं सदक़े के माल में से सोने का एक टुकड़ा घर में छोड़ आया था। मैं ने पसंद न किया कि यह रात भर मेरे पास मौजूद रहे इसलिए मैंने इसे तक़्सीम कर दिया।

हज़रत उम्मे सलमाॅ बयान करती हैं कि एक मर्तबा नबी ﷺ मेरे पास तशरीफ़ लाए और आपॅ के चेहरे का रंग बदला हुआ था। मैं ने समझा कि किसी तकलीफ़ या दर्द की वजह से ऐसा होगा। मैं ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाहﷺ! आप के चेहरे का रंग बदला हुआ है, क्या ये किसी तकलीफ़ की वजह से है? आंहुज़ूरﷺ ने फ़रमाया कि नहीं! बल्कि उन सात दीनारों की वजह से है जो हमारे पास शाम को आए थे और रात गुज़र गई और हम ने उन्हें ख़र्च नहीं किया। मैं उन्हें बिस्तर के कोने में भूल गया था जब मुझे याद आया तो मुझे सख़्त तकलीफ़ हुई है।

हज़रत मसीह मौऊद॑ फ़रमाते हैं कि आंहज़रत॑ की ये हालत थी कि आपके पास जो कुछ होता वो सख़ावत कर दिया करते थे। आंहुज़ूरﷺ बहुत हया वाले थे। जब भी आप॑ से कुछ मांगा जाता आप॑ अता फ़रमा देते। आप॑ अता करने के लिहाज़ से सब लोगों से ज़्यादा सख़ी थे।

एक दफ़ा आप॑ के पास सत्तर हज़ार दिरहम आए। ये माल एक चटाई पर रखा गया। आप॑ यह माल तक़्सीम करने के लिए खड़े हुए कोई सवाली ऐसा न आया जिसे आप॑ ने ख़ाली हाथ वापस किया हो यहाँ तक कि आप॑ ने सारा माल तक़्सीम फ़रमा दिया।

हज़रत उस्मान॑ ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अंगूर का एक गुच्छा बतौरे हदिया पेश किया और यह भी बयान किया जाता है कि खजूरों का एक ख़ुशा था। पहले एक जगह अंगूर है, एक जगह खजूर है। बहरहाल कहते हैं फिर एक साइल आया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वो उसे दे दिया। फिर हज़रत उस्मान ने इसे एक दिरहम में ख़रीद लिया, वह ख़ुशा जो था आप लाए थे, कोई ख़ास क़िस्म का होगा, खजूर अच्छे होंगे। आप ने एक दिरहम में उस से ख़रीद के इस साइल से, दोबारा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश कर दिया। फिर वो साइल दोबारा आ गया तो उसे आप॑ ने फिर दे दिया उसे। और इसी तरह ये मुआमला तीन मर्तबा हुआ। हज़रत उस्मान ख़रीदते थे, आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पेश करते थे, वो आ कर दोबारा मांगता था फिर आप॑ उस को दे देते थे। बिल-आख़िर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नर्मी से उस मांगने वाले को फ़रमाया: ऐ फ़लां! क्या तुम साइल हो या ताजिर! तुम मांगने आए हो। सवाली इस तरह तो न हीं करते, तुम तो दिरहम भी कमाई जा रहे और ये तिजारत कर रहे हो तुम। आप॑ ने इन्कार नहीं किया, लेकिन बड़े हकीमाना रंग में नसीहत फ़रमाई कि यह अमल मुनासिब नहीं है जो तुम कर रहे हो।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम के हवाले से हज़रत ज़ैद बिन सअना रज़ी. के क़बूलियते इस्लाम का वाक़िया बयान करने के बाद सैय्यदना हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया: यह है आप का हुस्ने ख़ुल्क़ कि न सिर्फ़ कर्ज़ ले कर एक क़ौम को भूख से निजात दिलवाई बल्कि अपने अख़्लाक़ से एक यहूदी आलिम को भी मुसलमान बना लिया।

اللھم صلی علی محمد وعلی اٰل محمد و بارك و سلم انك حمید مجید۔

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَن یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلاَ مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلاَ ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ أَنْ لَآ اِلٰہَ اِلاَّ اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ، عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْ کُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है,सम्पर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात,पंजाब - 18001032131